E-Learning Study Material
By Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE ARA
V.K.S. UNIVERSITY ARA BIHAR

B.A. Economics Hons Second year
Paper third.

---

## Problems of Sugar Industry in India

:- भारत में चीनी उद्योग का विवरण वर्ष 2002-03 में इस प्रकार थी :-

तालिका- B: राज्यवार चीनी मिलों की स्थिति

| राज्य | उत्पादन (लाख टन में) | पूरे भारत का प्रतिशत | कारखानों की संख्या | पेराई का दिवस |
|---|---|---|---|---|
| महाराष्ट्र | 65.81 | 34.82 | 105 | 200 |
| उत्तर प्रदेश | 45.69 | 24.17 | 110 | 176 |
| तमिलनाडु | 17.65 | 9.34 | 32 | 175 |
| कर्नाटक | 11.51 | 6.09 | 30 | 134 |
| आंध्रप्रदेश | 11.36 | 6.01 | 35 | 108 |
| गुजरात | 10.51 | 5.56 | 16 | 166 |
| हरियाणा | 3.61 | 1.91 | 8 | 175 |
| पंजाब | 3.55 | 1.88 | 13 | 145 |
| बिहार | 3.28 | 1.74 | 28 | 99 |
| अन्य | 16.03 | 8.48 | 43 | N.A. |
| समस्त भारत | 189.00 | 100.00 | 420 | 158 |

Scanned with CamScanner

नोट - अन्य उत्पादक राज्यों में मध्यप्रदेश, राजस्थान केरल, ~~[illegible]~~ उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और असम है।

चीनी उद्योग की समस्याएँ :- भारत वर्ष में चीनी उद्योग विभिन्न गंभीर एवं जटिल समस्याओं से ग्रस्त है जिनका समाधान इस उद्योग एवं क्षेत्रीय विकास के लिए अति आवश्यक है। कुछ प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं :-

1. गन्ने की कम उपज :- भारत में गन्ने की खेती सबसे बड़े क्षेत्र में होती है लेकिन दुनिया के कुछ प्रमुख गन्ना उत्पादक देशों की तुलना में प्रति हेक्टेयर उपज बहुत कम है। भारत की उपज जावा में 90 टन और हवाई में 121 टन की तुलना में केवल 64.5 टन प्रति हेक्टेयर है। जिससे कुल उत्पादन कम होता है और चीनी मिलों को गन्ने की कम आपूर्ति हो पाती है। इस समस्या का निराकरण करने के लिए उच्च पैदावार, जल्दी परिपक्व, रोग प्रतिरोधी और गन्ने की उच्च सुक्रोज सामग्री किस्मों के साथ साथ बीमारियों एवं कीटों को नियंत्रित करने के लिए प्रयास किया जा रहा है ताकि गन्ने की फसल अधिक हो।

2. लघु पेराई सत्र - चीनी का निर्माण वर्ष के कुछ निश्चित महीनों में ही होता है। वर्ष की शेष अवधि के दौरान मिलें एवं इनके श्रमिक निष्क्रिय हो जाते हैं जिससे वित्तीय समस्या उत्पन्न हो जाती है

3. उत्पादन का बहुलतात्मक स्वरूप :- गन्ने की खेती के लिए उपलब्ध भूमि एक समान नहीं होती है और गन्ने के कुल उत्पादन में उतार-चढ़ाव होते रहता है। इससे मिलों को गन्ने की आपूर्ति प्रभावित होती है और चीनी का उत्पादन भी हर साल बदलता रहता है।

4. गन्ना से चीनी का रिकवरी दर अन्य चीनी उत्पादक देशों की तुलना में काफी कम है। यह दर जावा, हवाई और आस्ट्रेलिया में 14-16 प्रतिशत है जबकि भारत में 10-12 प्रतिशत है।

5. उत्पादन की उच्च लागत :- गन्ने की उच्च लागत, अकुशल पुरानी तकनीक, उत्पादन की जटिल वैधानिक प्रक्रिया और विनिर्माण की उच्च लागत में भारी उत्पाद शुल्क लगता है। भारत में चीनी की उत्पादन लागत दुनिया में सबसे अधिक है।

6. भारत में अधिकांश मिलें छोटे आकार की हैं। जो छोटे पैमाने में चलती है इसके अलावे चीनी मिलों में पुरानी मशीनरी का प्रयोग, खंडसारी और गुड़ उद्योग के साथ प्रतिस्पर्द्धा, वित्त में दोषपूर्ण असंतुलन, प्रति व्यक्ति चीनी का खपत का कम होना आदि के फलस्वरूप चीनी उत्पाद बढ़ने के बजाय घटता जा रहा है।

---

Scanned with CamScanner